Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2016 = 6.17, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.49366, JULY-AUG 2017, VOL- 4/35

भारत में नमक की समस्या और नमक मार्चः एक ऐतिहासिक अध्ययन

मो0 अजहर सुलैमान
छोटी काजीपुरा, पो0– लालबाग, दरभंगा

Abstract

बिहार और उड़ीसा के बाद, यह अब पश्चिम बंगाल है जहां लोगों ने अफवाहों पर नमक खरीदने से घबराहट की है कि यह बाजारों से गायब हो जाएगा। दार्जिलिंग में इसकी पैदावार के कारण इसकी कीमत में 100 रुपये प्रति किलोग्राम की अभूतपूर्व वृद्धि हुई। भारत में मुद्रास्फीति सबसे बड़ी समस्या है। मीडिया के अनुसार, हर मध्यवर्गीय व्यक्ति को महंगाई के कारण समस्याओं का सामना करना पड़ता है। नवंबर 2013 में, राज्य सरकार ने लोगों से अपील की कि वे अपनी मूल कीमत से चार से दस गुना अधिक भुगतान करके काला बाज़ार से नमक न खरीदें। आज इस तरह की खबरें हमें महात्मा गांधी के नमक मार्च के बारे में सोचती हैं। उन्होंने लिखा है कि भारत में नमक पर लगाया गया कर हमेशा आलोचना का विषय रहा है। इस पत्र का उद्देश्य लोगों को भारत में नमक के महत्व और उत्पादन के बारे में जागरूक करना है, साथ ही गांधी के नमक मार्च के कारणों के बारे में सोचना है।

मुख्य–शब्दः *नमक समस्या; नमक उत्पादन; नमक कर; नमक मार्च।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

परिचय

नमक हमारे शरीर के मूल तत्वों में से एक है। नमक के बिना हम एक पल भी मौजूद नहीं रह सकते थे। यह नमक में मौजूद सोडियम है जिसे शरीर को विभिन्न प्रकार के आवश्यक कार्यों को करने के लिए आवश्यक होता है। नमक हमारी रक्त कोशिकाओं में तरल पदार्थ को बनाए रखने में मदद करता है और इसका उपयोग हमारी नसों और मांसपेशियों में जानकारी संचारित करने के लिए किया जाता है। यह हमारी छोटी आंतों से कुछ पोषक तत्वों के उत्थान में भी उपयोग किया जाता है। शरीर नमक नहीं बना सकता है और इसलिए हम यह सुनिश्चित करने के लिए भोजन पर निर्भर हैं कि हमें आवश्यक सेवन मिले।[1]

इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिसिन शरीर के लिए सोडियम का पर्याप्त स्तर प्राप्त करने के लिए लोगों को हर दिन आधा चम्मच नमक का सेवन करने की सलाह देता है। सोडियम एक इलेक्ट्रोलाइट है जो मांसपेशियों के कार्य और जलयोजन को बनाए रखने में मदद करता है। यदि सोडियम के स्तर की भरपाई नहीं की जाती है, तो ऐसी संभावना है कि रक्तचाप कम हो जाएगा जिससे व्यक्ति को चक्कर आ सकता है। तो नमक शरीर के लिए आवश्यक है ताकि इसके लिए बेहतर तरीके से काम किया जा

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सके। लेकिन एक बात जो ध्यान में रखनी चाहिए वह यह है कि आपको जरूरत के अनुसार नमक का सेवन करना चाहिए और इसे नहीं खाना चाहिए।[2]

नमक उत्पादनः

यूएस और कनाडाई वॉल्यूम कम होने के कारण 2012 में पिछले वर्ष के मुकाबले नमक का उत्पादन 2.1 प्रति ात घट गया। उत्तरी अमेरिका में सर्दी हल्की थी जिससे उत्पादन में गिरावट आई। कई देशों ने 2012 में विश्व बाजार में कम नमक की आपूर्ति की, जबकि किसी विशेष देश या क्षेत्र के उत्पादन में कोई उल्लेखनीय वृद्धि नहीं हुई। चीन 26.1 प्रति ात हिस्सेदारी के साथ बाजार में अग्रणी है। वैश्विक मात्रा में यूएसए का योगदान 14.4 प्रति ात है। जर्मनी, भारत और ऑस्ट्रेलिया क्रमशः 6.6 प्रति ात, 6.1 प्रति ात और 4.2 प्रति ात संख्या में हैं। अन्य उत्पादक छोटे हैं और नमक बाजार को प्रभावित नहीं करते हैं ।1

नमक भारत के संविधान में एक केंद्रीय विषय है और यह 7 वीं शताब्दी के संघ सूची के आइटम नंबर 5 के रूप में दिखाई देता है। पिछले 5,000 वर्षों से भारत के पश्चिमी तट पर कच्छ के रण के साथ नमक का उत्पादन किया जाता रहा है। भारत चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद दुनिया में तीसरा सबसे बड़ा नमक उत्पादक देश है। वैश्विक वार्षिक उत्पादन लगभग 230 मिलियन टन है। पिछले 60 वर्षों में नमक उद्योग की वृद्धि और उपलब्धि शानदार रही है। 1947 में जब भारत को स्वतंत्रता मिली, तो उसकी घरेलू आवश्यकता को पूरा करने के लिए यूनाइटेड किंगडम और एडेन से नमक आयात किया जा रहा था। लेकिन आज इसने न केवल अपनी घरेलू आवश्यकता को पूरा करने के लिए नमक के उत्पादन में आत्मनिर्भरता हासिल की है, बल्कि विदेशों में अधिशेष नमक का निर्यात कर रहा है। 1947 के दौरान नमक का उत्पादन 1.9 मिलियन टन था, जो 2011–12 के दौरान दस गुना बढ़कर 22.18 मिलियन टन हो गया है।[3]

भारत ने वर्ष 2011–12 के दौरान लगभग 35 लाख टन नमक का निर्यात किया। भारत से नमक आयात करने वाले अन्य प्रमुख देश जापान, बांग्लादेश, इंडोनेशिया, दक्षिण कोरिया, उत्तर कोरिया, मलेशिया, यूएई, वियतनाम, क्वेटा आदि हैं।

नमक कर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमिः

ब्रिटिश शासन से पहले नमक का कराधानः

- नमक एक कमोडिटी है जिस पर मौर्यों के समय से भारत में कर लगाया जाता रहा है
- चंद्रगुप्त मौर्य के समय में भी नमक पर कर प्रचलित रहा है।

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा नमक का कराधानः

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

• 1772 में, तत्कालीन गवर्नर–जनरल वारेन हेस्टिंग्स ने कंपनी के नियंत्रण में एक बार फिर नमक व्यापार लाया।

• 1780 में, वारेन हेस्टिंग्स ने एक बार फिर सरकारी नियंत्रण में नमक व्यापार लाया।

• 1788 से, कंपनी नीलामी द्वारा थोक विक्रेताओं को बेचने के लिए ले गई। 1 नवंबर 1804 को, ब्रिटिश ने उड़ीसा में नए विजय प्राप्त नमक का एकाधिकार किया।

• 19 वीं शताब्दी की शुरुआत में, नमक कर को अधिक लाभदायक बनाने और इसकी तस्करी को रोकने के लिए, ईस्ट इंडिया कंपनी ने पूरे बंगाल में सीमा शुल्क जांच बिंदु स्थापित किए।

ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा नमक का कराधानः

• ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा शुरू किए गए कराधान कानून नब्बे साल के दौरान प्रचलन में थे।

• 1900 और 1905 में, भारत दुनिया में नमक का सबसे बड़ा उत्पादक था, जिसकी उपज क्रमशः 1,021,426 मीट्रिक टन और 1,212,600 मीट्रिक टन थी।

• 1923 में लॉर्ड रीडिंग के वायसरायटी के तहत नमक कर को दोगुना करने के लिए एक विधेयक पारित किया गया।

• नमक कर को विनियमित करने वाले पहले कानून ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा बनाए गए थे।

• 1835 में, सरकार ने मौजूदा नमक कर की समीक्षा के लिए एक नमक आयोग की नियुक्ति की।

नमक कर का प्रभाव

नमक की उच्च कीमत ने आम आदमी के लिए अप्रभावी बना दिया जिसके परिणामस्वरूप आयोडीन की कमी के कारण कई बीमारियां उत्पन्न हुईं। अभय चरण दास ने 1881 में प्रकाशित अपने, द इंडियन रयोट 'में लिखा थाः" फिर से एक और भी मनहूस प्राणी है, जो मजदूर का नाम रखता है, जिसकी आय प्रतिवर्ष पैंतीस रुपये तय की जा सकती है। यदि वह अपनी पत्नी और तीन बच्चों के साथ, चौबीस सेर (49 सइ.) नमक का सेवन करता है, तो उसे दो रुपये और सात साल के लिए, या दूसरे शब्दों में 7 प्रतिशत आयकर देना होगा। अब हम इसे अपने पाठकों के लिए छोड़ना चाहते हैं कि क्या रैयतों और मजदूरों को आवश्यक मात्रा में नमक की खरीद करनी चाहिए। हम अपने स्वयं के अनुभव से सकारात्मक रूप से बता सकते हैं कि एक साधारण रैयत कभी भी दो–तिहाई से अधिक की खरीद नहीं कर सकता है, जिसकी उसे आवश्यकता है, और यह कि एक मजदूर आधे से अधिक नहीं।''

दक्षिण अफ्रीका में, महात्मा गांधी ने 1891 में आवधिक शाकाहारी में नमक कर पर अपना पहला लेख लिखा था। उन्होंने द इंडियन ओपिनियन में लिखाः 'भारत में नमक पर लगाया गया कर हमेशा

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आलोचना का विषय रहा है। इस बार इसकी प्रसिद्ध डॉ. हचिंसन ने आलोचना की है जो कहते हैं कि 'भारत में ब्रिटिश सरकार के लिए इसे जारी रखना बहुत शर्म की बात है, जबकि जापान में पहले से लागू एक समान कर को समाप्त कर दिया गया है। नमक हमारे आहार में एक आवश्यक लेख है। यह कहा जा सकता है कि भारत में कुष्ठ की बढ़ती घटनाओं का कारण नमक कर था। ' डॉ. हचिंसन नमक कर को एक बर्बर प्रथा मानते हैं, जो बीमार होकर ब्रिटिश सरकार बन जाती है। '

1909 में, महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका से अपने हिंद स्वराज में लिखा था, ब्रिटिश प्रशासन से नमक कर को खत्म करने का आग्रह किया। भारत में मार्च से अप्रैल 1930 तक हुआ नमक मार्च, महात्मा गांधी के नेतृत्व में नागरिक अवज्ञा का एक अधिनियम था (1869 –1948) भारतीय पर अंग्रेजों द्वारा लगाए गए नमक कर का विरोध करना।

नमक मार्चः

ब्रिटेन के नमक अधिनियमों ने भारतीयों को भारतीय आहार में नमक इकट्ठा करने या बेचने से रोक दिया। नागरिकों को ब्रिटिश से महत्वपूर्ण खनिज खरीदने के लिए मजबूर किया गया था, जिन्होंने नमक के निर्माण और बिक्री पर एकाधिकार का उपयोग करने के अलावा एक भारी नमक कर लगाया। हालाँकि भारत के गरीबों को कर के तहत सबसे ज्यादा नुकसान उठाना पड़ा, लेकिन भारतीयों को नमक की आवश्यकता थी। नमक अधिनियमों को धता बताते हुए, गांधी ने तर्क दिया, कई भारतीयों के लिए एक ब्रिटिश कानून को अहिंसक तरीके से तोड़ने का एक सरल तरीका होगा। भारत में ब्रिटिश शासन की शुरुआत 1858 में हुई थी। दक्षिण अफ्रीका में दो दशकों तक रहने के बाद उन्होंने वहां रहने वाले भारतीयों के नागरिक अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी, गांधी 1915 में भारत लौट आए और भारत की स्वतंत्रता के लिए काम करने लगे। गांधी ने "नमक सत्याग्रह", या जन सविनय अवज्ञा के अपने नए अभियान के लिए ब्रिटिश नमक नीतियों के प्रतिरोध का ऐलान किया।[4]

नमक मार्चः 1930

12 मार्च 1930 को, गांधी ने अपने आश्रम, या धार्मिक रीट्रीट से, अहमदाबाद के पास साबरमती में अरब सागर पर डांडी के तटीय शहर में लगभग 240 मील की दूरी पर कई दर्जन अनुयायियों के साथ सेट किया। वहां, गांधी और उनके समर्थकों को समुद्री जल से नमक बनाकर ब्रिटिश नीति की अवहेलना करनी थी। पूरे रास्ते में, गांधी ने बड़ी भीड़ को संबोधित किया और प्रत्येक बीतते दिन के साथ बढ़ती संख्या में लोग नमक सत्याग्रह में शामिल हुए। 5 अप्रैल को जब वे दांडी पहुंचे, तब तक गांधी हजारों लोगों की भीड़ के सिर पर थे। उन्होंने प्रार्थना की और प्रार्थना का नेतृत्व किया और अगले दिन सुबह नमक बनाने के लिए समुद्र में चले गए।

उन्होंने समुद्र तट पर नमक के फ्लैटों पर काम करने की योजना बनाई थी, जो उच्च ज्वार में क्रिस्टलीय समुद्री नमक के साथ सौंपे गए थे, लेकिन पुलिस ने उन्हें नमक जमा को कीचड़ में कुचल

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कर जंगल कर दिया। फिर भी, गांधी नीचे पहुँचे और मिट्टी से प्राकृतिक नमक की एक छोटी गांठ उठाकर ंदक और ब्रिटिश कानून को धता बता दिया। दांडी में, हजारों लोगों ने उनकी अगुवाई की, और बंबई के तटीय शहरों और कराची में, भारतीय राष्ट्रवादियों ने नमक बनाने में नागरिकों की भीड़ का नेतृत्व किया। भारत भर में सविनय अवज्ञा टूट गई, जल्द ही लाखों भारतीय शामिल हुए, और ब्रिटिश अधिकारियों ने 60,000 से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया। गांधी को खुद 5 मई को गिरफ्तार किया गया था, लेकिन उनके बिना सत्याग्रह जारी रहा।[5]

21 मई को, कवि सरोजिनी नायडू (1879–1949) ने बंबई से लगभग 150 मील उत्तर में, धरसाना नमक वर्क्स पर 2,500 मार्च का नेतृत्व किया। कई सौ ब्रिटिश–नेतृत्व वाले भारतीय पुलिसकर्मी उनसे मिले और शातिर प्रदर्शनकारियों को बुरी तरह पीटा। अमेरिकी पत्रकार वेब मिलर द्वारा दर्ज की गई इस घटना ने भारत में ब्रिटिश नीति के खिलाफ एक अंतर्राष्ट्रीय आक्रोश पैदा कर दिया।

नमक मार्चः उसके बाद

जनवरी 1931 में, गांधी को जेल से रिहा कर दिया गया। बाद में उन्होंने भारत के तत्कालीन वायसराय लॉर्ड इरविन (1881–1959) से मुलाकात की और भारत के भविष्य पर लंदन के एक सम्मेलन में समान बातचीत की भूमिका के बदले सत्याग्रह को बंद करने पर सहमत हुए। उसी वर्ष अगस्त में, गांधी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में सम्मेलन की यात्रा की। बैठक एक निराशा थी, लेकिन ब्रिटिश नेताओं ने गांधी को एक ऐसी ताकत के रूप में स्वीकार किया था जिसे वे दबा नहीं सकते थे या अनदेखा नहीं कर सकते थे ।

निष्कर्ष

हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि वर्तमान परिदृश्य में मध्यम वर्ग और गरीब भारतीयों को मूल्य वृद्धि से संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। मूल्य वृद्धि या मुद्रास्फीति हमारी जैसी बढ़ती अर्थव्यवस्था की एक आवश्यक बुराई है। यह उपयुक्त और स्थायी उपायों के माध्यम से तैयार किया जा सकता है। इसे नियंत्रण में लाना भारत सरकार और अर्थशास्त्रियों का कर्तव्य है। उपलब्ध एकमात्र विकल्प विकास के नव–उदारवादी मॉडल को फेंकना और लोगों को केंद्रित विकास मॉडल को अपनाना है। आज जरूरत इस बात की है कि जीवन के सभी पहलुओं में गांधीवादी मूल्यों को लागू किया जाए।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

संदर्भ

गांधी, महात्मा; डाल्टन, डेनिस (1996), चयनित राजनीतिक लेखन, हैकेट प्रकाशन कंपनी, नई दिल्ली, पृ. 175

गांधी, एम. के. (2001), अहिंसात्मक प्रतिरोध (सत्याग्रह), कूरियर डोवर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.67

हार्डिमन, डेविड (2003), गांधी इन हिज़ टाइम एंड आवरसः द ग्लोबल लिगेसी ऑफ़ हिज़ आइडियाज़, कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 96

आदम्स, जद, 2011, द ट्रु मैन बिहाइण्ड इंडिया, पेगासुस बुक्स, न्यूयॉर्क, पृ. 121

दास, रत्न, 2005, द ग्लोबल विजन ऑफ महात्मा गांधी, सरूप एण्ड सन्स, नई दिल्ली, पृ. 58

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies